पर्यावरणकौमुदी

PARYAVARANKAUMUDI

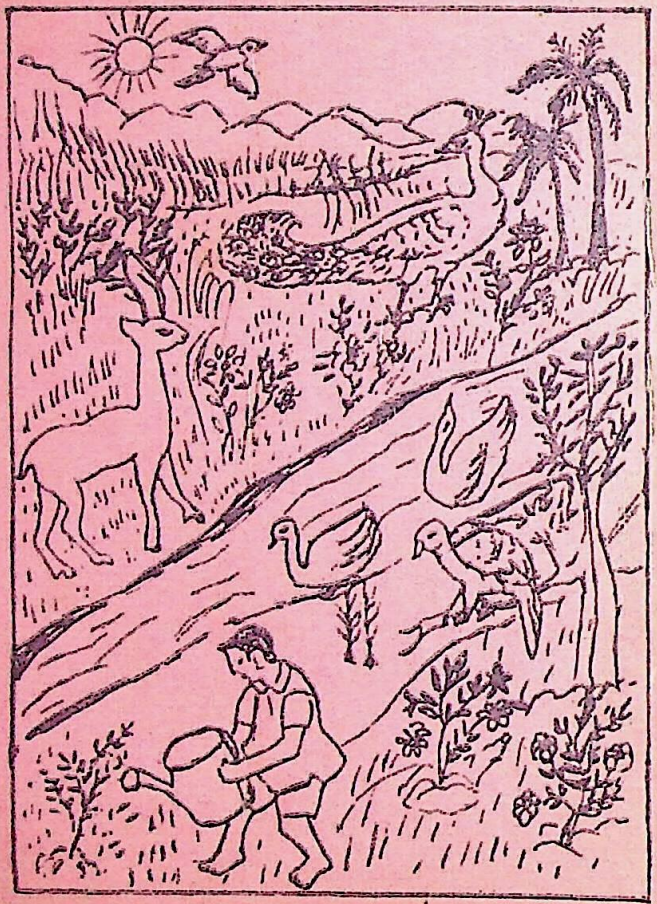

—अमरश्री "दास"

पर्यावरणकौमुदी

PARYAVARANKAUMUDI

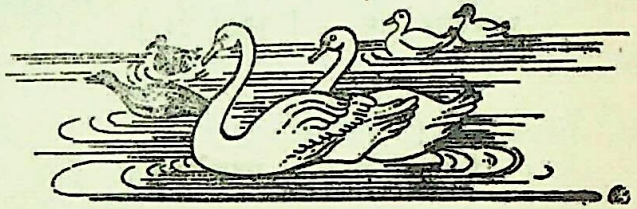

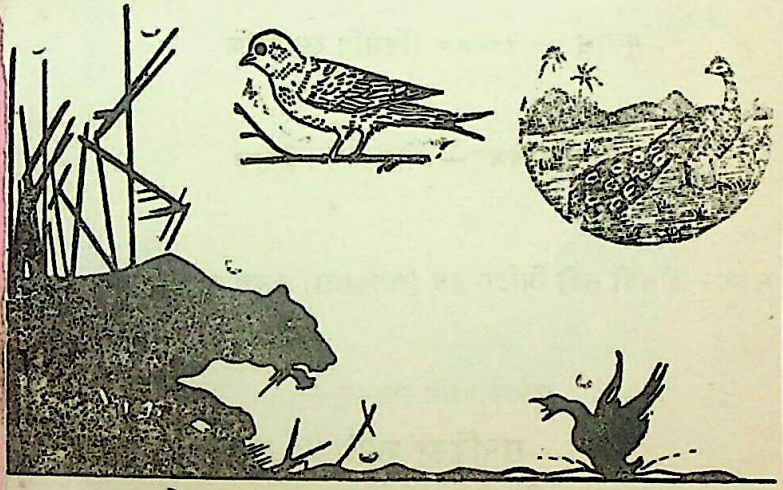

—बनारसी "दास"

विमलाप्रकाशनम्
अक्रोधपुरम् (अकोढ़ी), मीरजापुरम् (उ० प्र०)

अस्य प्रकाशनादयः सर्वेऽधिकाराः प्रणेत्रा
स्वायत्तीकृताः ।

प्रथमसंस्करणम् — [१९९३ ई०]

प्रतयः - १००० (सहस्रमेकम्)

मूल्यम् — २०-०० (विंशति रुप्यकाणि)

मुखपृष्ठचित्रम्— श्रीमती लक्ष्मीराय

मुद्रक—बीसवीं सदी प्रिंटिंग प्रेस (मतवाला) गऊघाट, मीरजापुर

पुस्तक प्राप्ति स्थानम्—
रामकिंकर शर्मा
अकोढ़ी, मीरजापुर (उ० प्र०)

समर्पणम्

सदैव पर्यावरणस्य रक्षणं
विधास्यते यैर्मनुजैर्महीतले ।
महाजनेभ्यो ननु तेभ्य उज्ज्वलं
विनिर्मितं काव्यमिदं समर्पये ॥

—बनारसी "दासः"

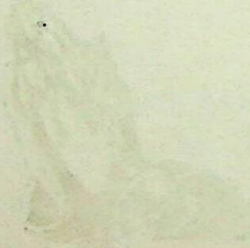

डा० नगेन्द्र

134 वैशाली, पीतमपुरा
दिल्ली—110034

प्रियवर,

"पर्यावरण कौमुदी" की पाण्डुलिपि मिली। आपने एक सर्वथा आधुनिक विषय पर काव्यगुण-सम्पन्न रचना प्रस्तुत की है। इसके लिए आप निश्चय ही साधुवाद के पात्र हैं।

शुभैषी —

नगेन्द्र

आत्मनिवेदनम्

मान्याः सहृदयधुरीणा विपश्चितः !

श्रीदाशरथिचरणाब्जचञ्चरीकस्य सर्वसंकष्टविमोचनस्यभक्तवत्सलस्य समीरात्मजस्य कृपाप्रसादेनमया संस्कृतहिन्द्यांग्लभाषासु "पर्यावरणकौमुदी" काव्यमिति विरचितम् । इदं काव्यमुत्कृष्टमपकृष्टं वाऽस्मिन् विषयेऽहं किञ्चिदपि वक्तुं न शक्नोमि । सहृदयहृदयसमाजस्य विषयोऽयम् । साम्प्रतं सम्पूर्णं विश्वं नानाप्रकारकैः प्रदूषणैर्ग्रस्तं दरीदृश्यते । पर्यावरणशोधनेन विना पृथिवीस्थाः सर्वेऽसुधारिणो दीर्घजीविनः सुखिनश्च न भवन्ति, न भविष्यन्त्येव । मृत्तिकावारिवायुवनस्पतिविहगपशुपतङ्गकीटजीवाणवः सर्वे पर्यावरणघटकाः सन्ति । एतेषां संरक्षणेनैव पर्यावरणस्य दोषनिवारणं जायते । किन्तु महतो दुःखस्य विषयो यत् स्वार्थनिरताः सर्वे मनुष्याः प्राकृतिकव्यवस्थाविध्वंसने नितरां संलग्नाः सन्ति । अहर्निशं ते पर्यावरणं प्रदूषयन्ति । अस्य शोधने

विटपीनां वनस्पतीनां महान् योगोऽस्ति । किन्तु ते वृक्षारोपणं न कृत्वा तेषां निकर्तनं कुर्वन्ति । वायुमण्डलमशुद्धं जातम् । समेषां प्राणिनां जीवनं जीवनमस्ति । तज्जीवनमपि मलिनं जातम् । यदि सर्वे मनुजाः पर्यावरणस्य रक्षां न करिष्यन्ति तर्हि शीघ्रमेव समस्ता सृष्टिर्विनङ्क्ष्यति । अतोऽस्य संरक्षणमस्माकं परमं कर्तव्यमस्ति । न स्यात् सृष्टेर्विनाश इत्यभिलक्ष्यीकृत्य मयेदं काव्यं विरचितम् ।

अस्य ग्रन्थस्य विषये हिन्दीसाहित्यस्य समीक्षकप्रवरा दिल्लीवास्तव्याः डॉ नगेन्द्रमहोदयाः हिन्दीभाषायां स्वकीयां सम्मतिं दत्वा मयि महतीं कृपां कृतवन्तः । मीरजापुरस्थ-कन्हैयालालबसन्तलालस्नातकोत्तरमहाविद्यालयस्य निवर्तमाना हिन्दीविभागाध्यक्षाः परमपूजनीया गुरवः, डॉ कन्हैयालाल-पाण्डेयमहोदयाः संस्कृतभाषायां मङ्गलाशंसनं लिखित्वा, संस्कृतहिन्दीभाषयोश्च महाकवयः दत्त इत्युपाख्याः पण्डादुर्गादत्त-उपाध्यायमहाशयाः संस्कृतकवितायां शुभाशंसां प्रदाय, दिल्ली-वास्तव्या वस्तुवादीतिहासलेखकाः समीक्षकाः कवयश्च डॉ० रामप्रसादमिश्रमहाभागाः, मीरजापुरस्थकन्हैयालालबसन्तलाल-स्नातकोत्तरमहाविद्यालयस्य वर्तमाना हिन्दीविभागाध्यक्षा गुरवः डॉ०मूलशंकरशर्ममहोदयाश्च हिन्दीभाषायां स्वकीये सम्मतीदत्वा, एवमेव प्रयागविश्वविद्यालयस्याङ्ग्लविभागस्य प्राध्यापकाः,

डॉ० सुरेशचन्द्र द्विवेदिनः, आंग्लभाषायां सम्मतिं दत्वा मयि महतीमनुकम्पां कृतवन्तस्तदर्थं तेषां समेषामाजीवनं कृतज्ञोऽस्मि। महाशक्तिपीठविन्ध्याचलस्थविन्ध्यवासिनीसंस्कृतपाठशालायाः प्राचार्यां, डॉ० रामप्यारेमिश्रमहोदयाः कविपरिचयं विलिख्य मय्यनुकम्पामकुर्वन्, तदर्थं तेषामपि कृतज्ञोऽस्मि। मीरजापुरस्थ-राजकीयकन्याप्रशिक्षणविद्यालयस्य कलाशिक्षिकाभिः श्रीमतीभिः लक्ष्मीरायमहोदयाभिर्मुखपृष्ठाय रेखाचित्रं निर्मितमतस्ता अपि साधुवादार्हाः सन्ति।

कन्नितराज्यविजयपुरस्य राज्ञीभिः माननीयाभी रमाकान्त-कुमारीभिः, "विमलाप्रकाशनाय" ग्रन्थस्यास्य प्रकाशनार्थं वित्तीयानुदानं दत्तम्, तदर्थं तासामहं परमकृतज्ञोऽस्मि। तासामंघ्रिसरोजाभ्यां च प्रणामं विनिवेदयामि। "बोसवींसदी प्रिंटिंगप्रेस" मतवालाख्यमुद्रणालयस्य स्वामिनः हरगोविन्दश्रेष्ठि-प्रवरा अपि साधुवादार्हाः येषामनवरतश्रमेण शीघ्रातिशीघ्रमिदं प्रकाशनं जातम्।

अन्ते च सहृदयविद्यानुरागिणः पाठकान् प्रति स्वां कृतज्ञतां प्रकटयामि।

विदुषां विधेयः

बनारसी "दासः":

मंगलाशंसा

विद्याविनयविनेयस्य विद्योतितान्तर्वदान्यस्य बनारसी-दासस्य कविमण्डलीप्रथितयशसः कवेस्सर्वथा नव्या भव्या च कृतिः पर्यावरणकौमुदीति मया सर्वशः व्यलोकि। रचनाया अस्याः शैली सरला, प्रसन्ना, प्राणप्रदा, विचार-प्रसवा, स्थाने स्थाने मृदुललितपदाढ्या चेत्यविरतं समास्ते। पर्यावरणविध्वंसने प्रदूषणे चासक्तानां कश्मलकर्मणां दुःसहप्रभावात् विश्वस्मिन् महतीविनाशपरम्परा प्रकृति-व्याकोपाय परिदृश्यते।

समस्ता पर्यावरणसमष्टिः परमेश्वरस्यानन्तकोटि-ब्रह्माण्डनायकस्य चिन्मयं वपुरस्ति। तथाहि—

"रोमाणि वृक्षौषधयः शिरोरुहाः
मेघाः परस्यास्थिनखानि तेऽद्रयः।
निमेषणं रात्र्यहनी प्रजापति--
र्मेढ्रस्तु वृष्टिस्तव वीर्यमिष्यते॥"

एतेषाम् परमात्मचिन्मयवपुषां विनशनं महतेऽनर्थाय कल्पते पर्यावरणकौमुद्याः कविप्रजापतिः सर्वथा प्रासंगिकं कविकर्म गृह्णाति अतः सुचिन्तितदृशायं कविबंहुशः प्रशस्तिभागस्ति ।

अस्याः सामयिक्या रचनायाः प्रकाशनं विवेकितल्लजानां साहित्यानुरागिणां मुदे भवितेति विश्वसिमि ।

काव्यकर्त्तुर्योगाय क्षेमाय श्रेयसे च पराम्बां विन्ध्यवासिनीं प्रार्थये, कविं च साधुवादैरभिषिञ्चामि ।

कन्हैयालाल पाण्डेयः
व्याकरणसाहित्यवेदान्ताचार्यः
एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत),
साहित्यरत्नम्, पी-एच०डी०
निवर्तमानो हिन्दीविभागाध्यक्षः
मीरजापुरस्थकन्हैयालालबसन्तलालस्नातकोत्तर-
महाविद्यालयस्य

शुभाशंसा

अक्रोधसंज्ञर्षिपुरस्थवासी, बनारसी "दास" इति प्रसिद्धः ।
प्राक्शक्तिशक्तः कवितावितानै, जीव्याच्चिरं वाग्जननीप्रसादात् ॥

या साम्प्रतं दूषणमातनोति, प्राज्यं च पर्यावरणाऽविशुद्धिः ।
तच्छान्तयेऽसौ कवितामुखेन, प्राबोधयद् भौतिकवादिनस्तान् ॥

ते दूषका आशु समे क्षयन्तां, भूतेषु सत्काव्यमिदं पठन्तः ।
स्याद् येन पर्यावरणं विशुद्धं, चराचरा मङ्गलमाप्नुवन्तु ॥

देवांऽऽग्लहिन्दीषु मनोज्ञकाव्यं, भाषासु निर्म्माय कविश्चसोऽयम् ।
महोपकारं कृतवान् यदेतं, तद् धन्यवादान् प्रददाति "दत्तः" ॥

—पण्डा दुर्गादत्त उपाध्यायः "दत्त"
साहित्य विभागाध्यक्षः
संयुक्त संस्कृत महाविद्यालयः
बरियाघट्टः, मीरजापुरम्

डा० राम प्रसाद मिश्र

१४ सहयोग आपर्टमेंट्स
मयूर विहार-१
दिल्ली-११००९१
दूरभाष : २२५१९७०

प्रशस्य पर्यावरण-काव्य

इक्कीसवीं सदी (ईसवी) के उद्गम पर खड़ी मानवजाति के सामने सबसे विकट समस्या है पर्यावरण-प्रदूषण की, क्योंकि समुद्र गँदले हो गये है, पहाड़ टाट-सपाट होते जा रहे हैं, नदियाँ नालियां बन रही हैं, वन मिटते जा रहे हैं तथा आकाश विषाक्त हो गया है—प्राणवायु-क्षेत्र (ओजोन) तक आहत हो चुका है। यदि मानव जाति मरण का वरण नहीं चाहती तो उसे पर्यावरण-रक्षा करनी ही होगी। हर्ष का विषय है कि युवा कवि श्री बनारसी "दास" ने संस्कृत में प्रशस्य "पर्यावरण-कौमुदी" की रचना की है तथा इसके हिन्दी एवं अंग्रेजी काव्यानुवाद भी प्रस्तुत किये हैं। रूसो, ब्लेक, कॉलरिज, वर्डस्वर्थ, प्रसाद प्रभृति कवियों एवं रस्किन, टॉल्स्टॉय, गांधी, पूर्णसिंह प्रभृति चिन्तकों की परम्परा का सम्मान करने तथा सामयिक काव्य रचना करने के कारणों से उनकी प्रशंसा की जानी चाहिये।

—राम प्रसाद मिश्र

दो शब्द

मानव के विकास की कहानी प्राकृतिक शक्तियों के सन्तुलन की ही गाथा है। जब तक यह सन्तुलन बना रहता है विकास की यह प्रक्रिया सतत गतिशील रहती है. असन्तुलन प्रलय का आमन्त्रण है। पौराणिक आख्यानों की पृष्ठभूमि में वैवश्वत मनु की जो भी कथा प्राप्त है, उससे प्राकृतिक शक्तियों के विक्षोभ और प्रलय का चित्र भी उजागर हुआ है। सारे पंचभूत अतिरंजित आचरणों के कारण जब भी विक्षुब्ध होते हैं, प्रारम्भ होती है विनाशलीला। कितनी बार यह सृष्टि बनी, मिटी है। उसके भग्नावशेषों पर निर्माण हुए हैं। कार्य. कारण रूप में विश्व के स्पन्दन् की जो भी दार्शनिक व्याख्या होती आई है, उसमें प्राकृतिक शक्तियों की विषम संरचना तथा समत्वमूलक निर्माण की धारणा को चर्चा पूरब और पश्चिम एक साथ करता रहा है। यही भौतिक उपादानों का द्वन्द्व और उसका स्पन्दन विकास की यात्रा भी है और अपनी विसंगतियों तथा अन्त-विरोधों में अपने अवसान का कारण भी।

ज्यों ज्यों वैज्ञानिक प्रगति के चरण आगे बढ़ते गये हैं,

सारी प्रकृति में एक हलचल मची हुई है। पूरा विश्व आसन्न सकट के कारण स्तब्ध है। आज जो विषय सबसे अधिक चर्चा में है, वह है पर्यावरण। मनुष्य की अनन्त आवश्यकतायें प्राकृतिक उपादानों का अहर्निश उपयोग कर रही हैं, बच रहा है एक कचरा। यह कहीं कार्बन बन कर और कहीं अन्य रूपों में केवल प्रदूषण का कारण बन रहा है। इस जीवन्त समस्या को काव्य संवेदनों से एकाकार कर उसे अभिव्यक्ति दिया है श्री बनारसी "दास" ने। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तीन भाषाओं में उनका भावोच्छलन सराहनीय है।

प्राचीन सन्दर्भों, ख्यात प्रसगों अथवा प्रचलित चरित्रों को आधार बनाकर लिखने का प्रयत्न सभी कर लेते हैं, परन्तु नव्य तथा प्रासंगिक जीवन सन्दर्भ को कविता का विषय सिद्धहस्त रचनाकार ही बनाते हैं। बनारसी "दास" में श्रेष्ठ काव्य प्रतिभा है। इनकी अभिव्यक्ति प्रांजल है। संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में समानभाव से आपकी काव्यगति अनन्त संभावनाओं का परिचय देती है। कुल बाईस छन्दों में विषय की जो गहनता तथा भाषा का ललित प्रयोग प्रकट हुआ है, वह सराहनीय है।

मै श्री बनारसी 'दास" के भीतर छिपे रचनाकार के प्रति अपनी शुभ-कामना प्रकट करता हूँ।

डा० मूलशंकर शर्मा

हिन्दी विभागाध्यक्ष

के० बी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय

मीरजापुर

Foreword

It is a great honour for me to write about Poet Banarasi "Das" and his excellent poem "Paryavaran Kaumudi." Banarasi "Das" is a dedicated trilingual poet from Mirzapur. He writes in Sanskrit, Hindi and English languages with equal ease and force. I invite the close attention of poetry lovers and Governments and their Academies to this new Poetic Voice from the eastern part of Uttar Pradesh who has consistently demonstrated the growth of his mind.

The experience of each new age requires new poetry. Banarasi "Das"s new book of

poems "Paryavaran Kaumudi" is certainly an example of new expression, new language and new experience. In twenty two slokas he has done the marvel. I consider this small book of poems as marvel in language. The poet is deeply worried at the destruction of environment. This subject has drawn the attention of the Scientists, Geographers, Journalists. It is for the first time that a poet (Banarasi "Das") has chosen to write on this important theme. Man's life on earth is dependent on environment. Environment is a great legacy that nature has offered to us and Banarasi "Das"s book "Paryavaran Kaumudi" precisely deals with this. He has really done a laudable job by selecting this theme as his subject. His book tells us the importance of environment preservation. The danger from environment pollution has increased thousand times. Banarasi "Das" inspires his readers to do something in this connection. At this

moment we are suffering acutely from air-pollution, water-pollution, deforestation, soil erosion, floods etc. which make our environment unfavourable for us.

Poet Banarasi "Das" shows the way through his twenty two lovely slokas which are highly readable. I have no doubt that his slokas will be read and remembered by our students in schools and colleges and universities. His book has been written in a highly poetic and suggestive manner. The book deals with the problem of self preservation which is important to us. The book teaches us to save our lives from the violence within and without. The poet's imagination presses back against the horror of environmental pollution. His slokas have something to do with the protection of our humanity and therefore they must be prescribed in college and university courses.

Banarasi "Das"s book inspires us to ponder over these points related to environmental preservation :

1. Consciousness towards environment.
2. Development of environmental consciousness and its propagation.
3. Immediate stoppage of irrational exploitation of natural resources.
4. Mutual balance of environment human beings and animals.
5. Mutual balance of different elements of environment.
6. Minimum and balanced use of different types of fuels like petrol, diesel, oil, wood, coal etc.
7. Stopping the misuse of electricity and other forms of energy in day to day life
8. Population control.

These are the points which have stirred my heart while reading the beautiful book of poems "Paryavaran Kaumudi,"

Here and there Banarasi "Das" reminds me of Vedas, and nature poets like Kalidas, Bhavabhuti, Wordsworth, Frost and Sumitra Nandan Pant. He has imbibed tradition by great labour. He tells us to live like a Man. We must love the earth, the sun, the moon, the rivers, the animals and help each other. Our civilization is in peril. But it can be protected by protecting our environment Man should not rob it like a robber. We must educate ourselves and others as well in this connection. We should show mercy and patience towards the poor and befriended. Do not accept readymade truths. Examine and re-examine all truths. Always speak and love the TRUTH. "Paryavaran Kaumudi" is a magnificent piece of contemporary poetry and

I strongly recommend it to all those who are concerned with the horror of environmental pollution. I greet Banarasi "Das" at the beginning of a great career.

Suresh Chandra Dwivedi
M. A. (Eng.) Ph, D., D. Litt
(Hon. U. S. A.).
Grierson and Rahul Award Winner Poet
Professor of Department of English
University of Allahabad

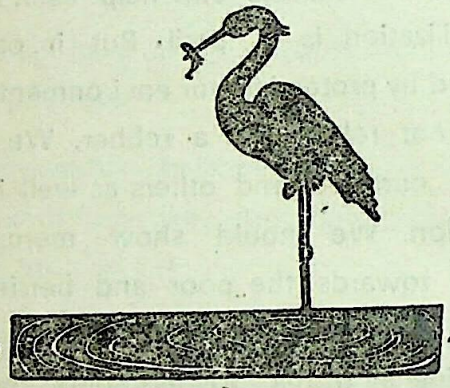

पर्यावरणकौमुदी

PARYAVARANKAUMUDI

–बनारसी "दास"

(१)

क्रोडे सुरम्ये प्रकृतेर्वसन्ति,
सौख्यान्वितं प्राणधरा अशेषाः ।
अस्त्याश्रयेयं सततं सुरक्षा
वयं समन्तात् सुखिनो भवामः ॥

सुन्दर प्रकृति-अंक में रहते
हैं सुखपूर्वक जीव सकल ॥
समाश्रया है यह सब जन की
हम रहते प्रसन्न प्रतिपल ॥

In the beauteous lap of nature
All the creatures happily live ;
Always to all she bestows shelter
Thus we treasure of pleasure receive.

सुगन्धियुक्तास्तरवः समस्ताः,
संभूषयन्ति प्रथिता जगत्याम् ।
अवर्णनीयो महिमाऽस्ति चैषां-
रक्ष्या विधेया मनुजैरशेषैः ॥

सौरभयुत निःशेष महीरुह
करते हैं भू को भूषित ।
अकथनीय है इनकी महिमा,
मनुजो ! हां ये संरक्षित ॥

All the trees with multicoloured flowers
The entire earth charming make ;
Their charm and beauty beg description,
Man must their care take

(३)

निपीय वातं विटपा विषाक्तं,
कुर्वन्ति वातावरणं विशुद्धम् ।
मित्राणि नः सन्ति कुटाः समग्राः,
संवर्धनीया अनिशं प्रयत्नात् ॥

पीकर वायु विपाक्त विटपचय,
करते वातावरण विमल ।
हम सब के हैं सुहृद वृक्ष सब,
हों सयत्न वर्धित अविरल ॥

Trees and plants inhale poisonous gases,
And they make the atmosphere pure;
Thus they are our best of friends,
We should provide protection sure.

उत्पादने प्राणसमीरणस्य,
योगो महान् पादपवल्लरीणाम् ।
समीरमालिन्यमशीतरश्मे–
स्तापं नितान्तं च हरन्ति घोरम् ॥

प्राणवायु के उत्पादन में,
वल्ली – वृक्ष योग करते ।
वायु–मलिनता और भानु का,
भीषणतम आतप हरते ॥

The greenery that covers our earth
Confers upon us benefits twain;
It produces life giving oxygen
Purifies the air that we breathe and
absorbs the heat of the sun.

वर्षानुवर्षं विनिपात्य पर्णा-
न्युत्पादयन्त्युर्वरकं हि वृक्षाः ।
कुर्वन्ति भूमेः क्षरणावरोधं,
ते हेतवः सन्ति जलप्रदाने ॥

पत्तों को प्रतिवर्ष गिराकर,
खाद बनाते हैं तरुगण ।
भूमि - कटाव रोकते हैं ये.
वर्षण के भी हैं कारण ॥

Shedding their foliage every autumn
Trees provide the best manure;
They hold fast soil - particles,
And give us rains both plentiful and pure.

परन्तु विस्मृत्य कुटोपकारं,
तत्कर्तने सन्ति रता मनुष्याः ।
तेषां महत्वं ननु मूढदृष्टे—
मार्गं न संयाति कदापि हन्त ! ॥

पर, उपकार भूल विटपों का
तत्कर्तन में रत हैं नर ।
हन्त ! कभी उनके महत्व पर,
ध्यान न देते मूढ़निकर ॥

How ungrateful is the human race !
That it has been cutting foolishly and fast;
The protective forest, cover of the earth
Which could for many a millennia last.

वनस्पतीनां विटपीचयानां.
नो स्यात् स्थितिश्चेद् वसुधातलेऽस्मिन् ।
मग्ना भविष्यन्ति विनाशसिन्धौ,
सर्वे जनास्तर्हि वदामि सत्यम् ॥

विटप वनस्पतियों की भू पर
संस्थिति होगी नहीं अगर ।
सच कहता हूँ नाश-सिन्धु में,
डूबेंगे सब सचराचर ॥

If the green cover of our earth is gone
Let me warn you my dear friends !
This pretty planet of ours shall become
The dreary abode of mere ghosts ere the
next century ends.

प्राप्नोति पुष्पाणि फलानि काष्ठं,
वहूनि वस्तूनि जनो वनेभ्यः ।
काष्ठस्य लोभाद्धरिता वनाली,
संकर्तिताऽऽस्ते भृशमस्ति दुःखम् ॥

लोग वनों से काष्ठ-फूल-फल,
विविध वस्तुएँ हैं पाते ।
कष्ट कहूँ क्या ? दारुलोभवश,
हरे वृक्ष काटे जाते ।

The generous wilds give us fruits and flowers
And many mere things that we need:
What a pity it is my friends !
That they're being cut just our furnaces to feed.

सुखस्य दुःखस्य चराः समस्ताः,
कुर्वन्त्यजस्रं च यथानुभूतिम् ।
तथाऽस्ति वृक्षेष्वपि चेतनत्वं,
दुःखं सुखं तेऽनुभवन्ति नूनम् ॥

सुख – दुख का अनुभव करते हैं,
प्राणीजन समस्त जैसे ।
करते हैं अनुभूति अवनिरुह,
अखिल चेतनायुत वैसे ॥

Those who've life do feel
Joy, dejection and deep sorrow;
So plants and creepers too do feel
Gaiety, gloom and pain in the marrow,

आरोप्य वृक्षान् विविधप्रकारान्,
कृत्वा च रक्षां प्रियपुत्रतुल्यम् ।
तीर्थादिकानामधिकं च पुण्यात्
पुण्यं च शान्तिं सुखमाप्नुयाम ॥

विविध भाँति के वृक्ष लगाकर,
करके पुत्र - तुल्य – रक्षण ।
तीर्थ पुण्य से अधिक पुण्य सुख –
शान्ति – लाभ पायें नरगण ॥

All kinds of flora should be planted on
fallow land,
They should be nursed as one's own off-pring;
This act shall give more "Punya" and "Sabab"
Than either "Pooja" or "Namaz" do bring.

आवश्यकं जीवनरक्षणार्थं,
पूतं जलं गन्धवहेन सार्धम् ।
अस्यामलत्वं समपेक्षणीयं,
हितं समेषां निहितं समग्रम् ॥

विमल वारि जीवन-रक्षण-हित,
है आवश्यक वायु सहित ।
है अपेक्ष्य निर्मलता इसकी,
इसमें सबका हित - विनिहित ॥

Cleanliness of air and water is a must
For the health and life of man ;
Hence we must purify them
For our well-being as much as we can.

निःस्वार्थभावेन समस्तनद्यः
क्षेत्राण्यशेषाण्युदकेन नित्यम् ।
सिञ्चन्ति, यच्छन्ति जलं च मिष्टं,
कुर्याम नीरं मलिनं वयं नो ॥

नदियाँ नित निःस्वार्थभाव से,
खेतों का करती सिंचन ।
मधुर नीर देती हैं, इनको,
रखें सुनिर्मल हमसब जन ।

Remember the debt that we owe
To all our rivers right and left;
They provide water to our fields and homes,
So clean and clear they should be kept.

वायोश्च नीरस्य विनैव मूल्यं,
सर्वा व्यवस्था प्रभुणा कृताऽस्ति ।
स्वार्थस्य पङ्केऽद्य नरा विलिप्ता,
नश्यन्ति हा ! हा ! प्रकृतेर्व्यवस्थाम् ॥

विभु ने विना मूल्य मारुत का,
जल का किया प्रबन्ध अतुल ।
स्वार्थपंक में लिप्त आज जन,
हैं विनाश में रत मिलजुल ॥

The Almighty has, in His kindness
Bestowed free air and water for all His
creatures
Selfishman is destroying, Alas !
All these, nature's pretty features.

कीटाः कुरङ्गाः पशवः पतङ्गा,
जीवाणवो व्योमचराः खगाश्च ।
सन्ति प्रकृत्या विनियन्त्रणायां,
समग्ररूपेण सहायवन्तः ॥

पशु पतंग जीवाणु कीट मृग,
अम्बरचारी विहगनिचय ।
प्रकृति-सन्तुलित करने में हैं,
करते पूर्ण योग निश्चय ॥

Insects, deer, moths and animals,
Microbes and flying birds in space;
All do help in balance of nature
At all times in every case.

प्रदूषणैरद्य समस्तविश्वं,
ग्रस्तं समुग्रैः परिपीडितञ्च ।
सम्पाद्यते वा यदि नो प्रयत्नं,
तदाशु सृष्टिस्तु विनङ्क्ष्यतीति ॥

आज विश्व भीषण दूषण से,
है आक्रान्त और पीड़ित ।
होगी सृष्टि विनष्ट शीघ्र ही,
यदि होगा न प्रयास उचित ॥

Today from perilous pollutions Alas !
The world is suffering as a whole ;
The creation of Almighty will be in ruins
If we bring not it under control.

प्रदूषणानां परिवर्धनेऽपि,
संख्या जनानां नु प्रधानहेतुः ।
अस्या निरोधेन विनाऽस्ति कर्तुं
शक्या न पर्यावरणस्य शुद्धिः ॥

है प्रधान कारण दूषण का,
जनसंख्या का यह जंगल ।
इसके बिना निरोध नहीं,
हो सकता पर्यावरण अमल ॥

For pollution's dangerous growth
Explosion of population is the factor main;
Check on population is a "wild goose chase"
If in checking it slack we remain.

औद्योगिकस्थानविदूषितांशै—
जर्जातं सुपर्यावरणं विवर्णम् ।
तैलैः समुद्भूतविपाक्तधूमै—
र्वायोरिदं मण्डलमस्त्यशुद्धम् ।

औद्योगिक जगहों से निश्चित,
पर्यावरण विवर्णावृत ।
तैलोद्भूत - विषाक्त धुएँ से,
है समीरमण्डल दूषित ॥

Dangerous fumes of industrial units
Are making the atmosphere dirty and impure;
The murky smoke from burning oil
Has made our environment poisonous more.

"ओजोनमूलस्य" विलस्य भागः,
क्षणे क्षणे सम्प्रति वर्धमानः ।
दिने दिने कष्टमशेषलोकाः,
सम्प्राप्य गच्छन्ति यमस्य गेहम् ॥

अहा ! छिद्र "ओजोन" परत का,
है बढ़ रहा सतत सम्प्रति ।
दिन दिन पीड़ा -भोग सभी जन,
हैं जा रहे यमालय प्रति ॥

Alas ! the holes in protective ozone
Are growing ceaselessly of a brisk pace;
And man is facing tortures, that
The punished in Hell are said to face.

प्रदुष्ट–पर्यावरण–प्रताने,
स्वस्त्यस्ति नो जीवनमस्मदीयम् ।
संरक्षणेनास्य वयं समन्ता–
ल्लप्स्यामहे सौख्यकदम्बकानि ॥

दूषित - पर्यावरण - पटल में,
अकल्याणमय है जीवन ।
इसकी रक्षा से पायेंगे,
सौख्य चतुर्दिक हमसबजन ॥

The dangerous dirty atmosphere
Has robbed our lives of joy and peace ;
If we protect and purify the air,
Our lives will be full of gaiety and ease.

वनस्पतीनां धरणीरुहाणा-
माच्छादनैः सर्ववनस्थलीनाम् ।
वपूंषि सर्वाणि वृतानि सन्तु,
स्थानं च रिक्तं नु भवेन्न किञ्चित् ॥

विटपवनस्पतितति वस्त्रों से,
वनवसुधा की देह सकल ।
ढ़की रहे सम्पूर्णरूप से,
हो न रिक्त कोई भी स्थल ॥

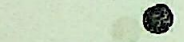

Trees and plants are the clothes
Wherewith the body of our earth is dressed;
I yearn for the day when deserts and marshes
Shall with greenery look refreshed.

क्षुद्रं विचारं सकलं विहाय,
भो बान्धवा ! विष्टपरक्षणार्थम् ।
वयं भवेम प्रयता नितान्तं,
भवेच्च सृष्टेर्नहि येन नाशः ।

बन्धुजनो ! जग की रक्षा-हित,
हीन विचार निखिल तजकर ।
हम हों सत्प्रयासरत, जिससे,
नष्ट न हो संसृति सुन्दर ॥

Oh, Lords of creation, defend the universe
Do all destructive selfish thoughts, forsake ;
Do all that you possibly can, so that
Destruction may not creation over take.

जना अशेषाः क्षितिमण्डलेऽस्मिन्,
बन्धुत्वभावेन विभो ! वसन्तु ।
विश्वस्य विश्वस्य हितं विधातुं,
बुद्धिं समेभ्यो विमलां प्रदेहि !!

विभो ! रहें बन्धुत्वभाव से,
इस भूतल पर मनुज सकल ।
करने के हित जगती का हित,
दें सबको मेधा निर्मल ।।

My prayer to God is that all His creatures
May with friendship and amity live;
Oh Almighty ! to all homosapiens
A cool and sympathetic heart do give.

बनारसी "दास"-जडाग्रयायी,
काव्यस्य सृष्टिं करणेऽक्षमोऽस्ति ।
किन्तु प्रसादेन समीरसूनोः,
काव्यं त्रिभाषासु करोति, सत्यम् ॥

है बनारसी "दास" न सक्षम
करने में कविता - सर्जन ।
है यह मारुति-कृपा, कर रहा,
भाषात्रय में वह लेखन ॥

Composing verses and poems sternly demand
Both high ability and consummate skill ;
Banarasi "Das" can boast of neither
but with Hanuman's grace
He is composing in three languages still.

कवि-परिचय

उत्तर प्रदेश के मीरजापुर जनपद में स्थित विन्ध्याचल धाम में स्वयं प्रकृति, शक्ति के रूप में माँ विन्ध्यवासिनी देवी के नाम से विराजमान हैं। केन्द्रस्थल विन्ध्याचल का चतुर्दिक पर्वतीय क्षेत्र विन्ध्यक्षेत्र के नाम से प्रख्यात है। विन्ध्याचल धाम से ४ कि० मी० दूर पश्चिम दिशा में गंगा तट पर स्थित अक्रोधपुर (अकोढ़ी) नामक ग्राम है। श्री बनारसी "दास" जी का जन्म इसी ग्राम में १६ अक्टूबर सन् १९५५ ई० में हुआ था। नापित कुलभूषण आपके पिता का नाम श्री मोलई था तथा माता का नाम श्रीमती कलावती देवी है। श्री बनारसी "दास" की बाल्यावस्था में पिता का निधन हो गया। माता ने कठोर परिश्रम और स्नेह से श्री बनारसी 'दास" का पालन पोषण किया। संघर्ष के क्षणों में भी श्री बनारसी "दास" जी की शिक्षा दीक्षा चलती रही। श्री "दास" जी भी बाल्यकाल से मेधावी छात्र थे। आपने अक्रोधपुर स्थित

महेश भट्टाचार्य इण्टर कालेज से सन् १९७२ में हाई स्कूल की परीक्षा विशेष योग्यता सहित प्रथम श्रेणी में तथा विन्ध्याचल स्थित विन्ध्यविद्यापीठ इण्टर कालेज से सन् १९७४ में इण्टर की भी परीक्षा विशेष योग्यता सहित प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया।

यद्यपि हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही मां के अशक्त हो जाने पर घर का भी भार आपके कंधों पर टिक गया, फिर भी आपके अध्ययन की शृंखला टूटी नहीं। इसी समय विन्ध्यविद्यापीठ इण्टर कालेज विन्ध्याचल के विद्वान प्राचार्य स्व० श्री रामधारी सिंह जी की दृष्टि इस मेधावी छात्र पर पड़ी, उन्होंने इनमें छिपी प्रतिभा का आकलन कर सतत प्रेरणा तथा साहाय्य प्रदान किया। सन् १९७६ में गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कन्हैयालाल बसन्तलाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय मीरजापुर से स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद श्री रामधारी सिंह जी की कृपा से आपकी विन्ध्य विद्यापीठ इण्टर कालेज में सहायक अध्यापक पद पर अस्थायी नियुक्ति हो गयी। सन् १९८० में आप भयंकर उदर रोग से पीड़ित हो गये, प्राचार्य श्री रामधारी सिंह जी सेवा निवृत्त हो गये, आपकी सेवा समाप्त हो गयी, साथ ही जीवन की आशा भी। श्री "दास" ने विपत्ति के इन भयंकर क्षणों में एक रात भगवान

आञ्जनेय के चरणों में विनम्र पत्रिका समर्पित की। पवन पुत्र महाबली की कृपा से इनके स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार होता गया, साथ ही इन्होंने पद्यात्मक विधा से भगवद् भजन प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार इनके कवित्व-शक्ति का प्राकट्य, रुग्णता तथा आरोग्यता प्राप्ति के अनन्तर हुआ। अंजनीनन्दन के ही कृपा प्रसाद से इन्हें जीवनी शक्ति के साथ साथ कवित्वशक्ति मिली, ऐसी श्री "दास जी की मान्यता है। स्वस्थ होने के बाद शिक्षा ग्रहण कार्य पुनः प्रारम्भ हुआ। शिक्षा के साथ साथ आपने स्तुतिपरक छोटी छोटी रचनायें भी लिखनी प्रारम्भ कर दीं। इन्होंने सन् १९८२ में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की साहित्याचार्य परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। आपने प्रयाग से आयुर्वेदरत्न, राजकीय प्रशिक्षण विद्यालय से अध्यापन प्रशिक्षण तथा पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय जौनपुर से हिन्दी में एम० ए० की उपाधि प्राप्त की। इस समय आप राजकीय सहायता प्रायोजित 'जन शिक्षण निलयम्' अकोढ़ी में प्रेरक के पद पर कार्यरत हैं। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी इन तीनों भाषाओं में काव्य-रचना-चतुर श्री बनारसी 'दास" को वस्तुतः मैं भक्त मानता हूँ। यद्यपि इनकी रचनाओं में विविध प्रकार की साहित्यिक विधाओं का पुष्कल परिपोषण हुआ है लेकिन इनके काव्य का सिंहावलोकन करने के बाद इनका

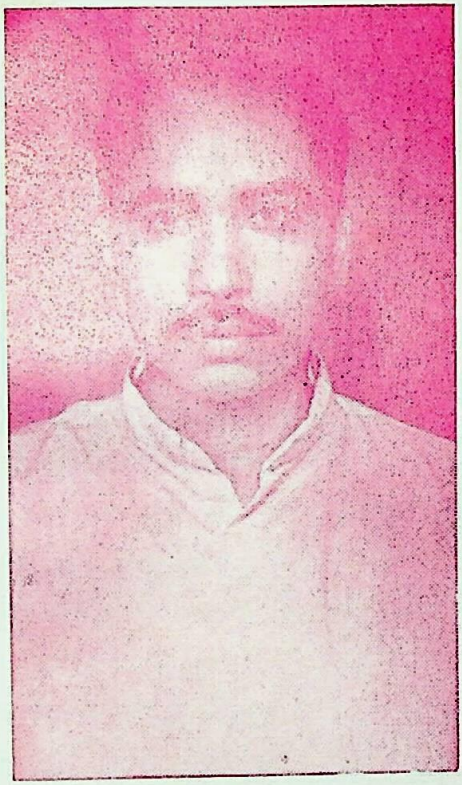

श्री बनारसी "दास"

जो व्यक्तित्व उभरता है वह "साहित्यिक" की अपेक्षा "भक्त" अधिक है। इनके मुख से निःसृत प्रथम कविता की निम्न पंक्ति मेरी उक्ति का समर्थन करती है—

'दास" कहै जाको नाम जानत जहान सब,
अनिल कुमार महाभीम हनुमान हैं।"

श्री "दास" जी ने फुटकर रचनाओं के अतिरिक्त कुछ काव्य, स्तोत्र आदि भी लिखे हैं जिनमें से कुछ प्रकाशित भी हो गये हैं—

(१) श्री हनुमद्- वन्दना (१९८२)
(२ "श्री विन्ध्यवासिनी चरितामृत" खण्डकाव्य (१९८९)
(३) श्री अष्टभुजा कथा मंजरी (१९९१)
(४) श्री विन्ध्यवासिनी भजनमाला (१९९१)
(५) श्री विन्ध्यवासिनी स्तोत्रावलिः (सस्कृत. १९९१)
(६) "उत्सर्ग" खण्ड काव्य (प्रकाश्य)
(७) "गान्धारी," खण्ड काव्य (प्रकाश्य)
(८ काव्य किञ्जल्क (प्रकाश्य)
(९, पर्यावरण-कौमुदी (१९९३)

प्रस्तुत रचना "पर्यावरण कौमुदी", संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी में लिखी गयी है तथा इन तीनों भाषाओं में श्री 'दास' जो की कविता निर्माण-कौशल की परिचायिका है। श्री "दास"

जी द्वारा अचानक जिस तरह से काव्यरचना प्रारम्भ की गयी तथा उनकी कविताओं में जैसी स्वाभाविकता, धारामयता दिखायी पड़ी वह किसी चमत्कार से कम नहीं। अतः मैं भी यह मानता हूँ कि इन्हें भगवान् मारुतसुत का शुभाशीर्वाद प्राप्त हुआ। हिन्दी साहित्य के प्रख्यात समीक्षक एवं कवि डा० नगेन्द्र जी ने इनकी काव्य रचनाओं को पढ़कर १८ सितम्बर सन् १९९२ में अपना उद्गार इस प्रकार व्यक्त किया था—

"आञ्जनेय की भक्ति का, जिसको मिला प्रसाद।
फिर उसको क्या चाहिये, नर का आशीर्वाद॥"

अन्त में मैं मां विन्ध्यवासिनी देवी से भक्त कवि के दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

डा० रामप्यारे मिश्र
एम० ए० (संस्कृत), साहित्याचार्य, पी-एच० डी०
प्राचार्य
श्री विन्ध्यवासिनी संस्कृत पाठशाला
विन्ध्याचल, मीरजापुर